प्रथम बुद्ध सन्देश

भिक्षु धर्मरक्षित

प्रथम बुद्ध सन्देश

भिक्षु धर्मरक्षित

प्रकाशक

भारतीय बौद्धसंघ

मलदहिया, वाराणसी

प्रथम संस्करण
२०००

मूल्य
५० नये पैसे

प्रकाशकीय वक्तव्य

बौद्ध धर्म क जन्म भारत में हुआ, वह यहीं से सारे संसार में फैला किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि वह कुछ शताब्दियों तक यहाँ से लुप्तप्राय हो गया था। उसके पूजनीय एवं दर्शनीय स्थानों तक को भारतीय जनता भूल गई थी। वे स्थान खंडहर और उजाड़ हो गये थे इधर भारत सरकार ने भगवान् बुद्ध के श्रीचरण-रज से पवित्र हुए तथा दर्शनीय बौद्ध-तीर्थों का उसी प्रकार विकास किया है, जैसा कि कभी परम श्रद्धालु उपासक अशोक आदि बौद्ध नरेशों ने किया था।

बौद्ध धर्म के चार महातीर्थों में वाराणसी के निकटवर्ती स्थान ऋषिपतन मृगदाय (सारनाथ) का बहुत बड़ा महत्त्व है, क्योंकि यहीं पर तथागत ने धर्मचक्र-प्रवर्तन किया था अतः यह बौद्धों के लिये परम पवित्र तथा प्रमुख तीर्थ है।

प्रायः लोग यह तो जानते हैं कि उक्त स्थान में तथागत ने धर्मचक्र प्रवर्तन किया था, अर्थात् उन्होंने यहीं पर अपना पहला सन्देश संसार को दिया था, किन्तु वह सन्देश क्या था ? इसका लोगों को बहुत ही कम ज्ञान है, इसलिए भारतीय बौद्ध संघ की ओर से इस "प्रथम बुद्ध सन्देश" नामक पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है, जिससे कि सर्वसाधारण जनता इसके यथार्थ अर्थ को जानकर अपने जीवन को सफल बना सकें।

ऊ चन्दिमा
प्रधान मंत्री,
भारतीय बौद्ध संघ,

बर्मी बौद्ध विहार,
सी २१/१ सी, मलदहिया,
वाराणसी
दिनांक १३ मई १९५७
बुद्धपूर्णिमा, बुद्धाब्द २५०१

आमुख

भारतीय बौद्धसंघ के प्रधान मंत्री पूज्य भदन्त ऊ चन्दिमा महास्थविर जी की आज्ञा से यह लघु-पुस्तिका तैयार की गई है, इसमें भगवान् बुद्ध के वे प्रथम उपदेश दिये गये हैं, जिन्हें उन्होंने ऋषिपतन मृगदाय में पंचवर्गीय भिक्षुओं को दिया था। ये उपदेश बौद्धधर्म के मूलतत्व एवं सार हैं, तथागत की इस प्रथम वाणी का अध्ययन-मनन करना प्रत्येक बौद्ध तथा बौद्धधर्म के जिज्ञासु का कर्तव्य है।

इस पुस्तिका के अन्त में बौद्ध उपासकों के उपयोग के लिये त्रिरत्न-वन्दना, पंचशील और अष्टशील भी दे दिये गये हैं।

सारनाथ, वाराणसी, भिक्षु धर्मरक्षित
६ मार्च १९५७
बुद्धाब्द २५००

विषय-सूची

धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्तं

धम्मचक्कप्पवत्तन सुत्तं

[१] एवं मे सुतं। एकं समयँ भगवा, बाराणसियं विहरति इसिपतने मिगदाये। तत्र खो भगवा पञ्चवग्गिये भिक्खू आमन्तेसिः—

द्वे अन्ता

[२] "द्वे' मे भिक्खवे! अन्ता पब्बजितेन न सेवितब्बा,— कतमे द्वे? (१) यो चायं कामेसु कामसुखल्लिकानुयोगो हीनो, गम्मो, पोथुज्जनिको, अनरियो, अनत्थसंहितो; (२) यो चायं अत्त-किलमथानुयोगो दुक्खो, अनरियो, अनत्थसंहितो। एते खो भिक्खवे! उभो अन्ते अनुपगम्म मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, चक्खुकरणी, ञाणकरणी, उपसमाय, अभिञ्ञाय, सम्बोधाय, निब्बानाय संवत्तति।

मज्झिमा पटिपदा

[१] कतमा च सा भिक्खवे! मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, चक्खुकरणी, ञाणकरणी, उपसमाय, अभिञ्ञाय, सम्बोधाय, निब्बानाय संवत्तति? अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, सेय्यथीदं—(१) सम्मादिट्ठि (२) सम्मासङ्कप्पो (३) सम्मावाचा (४) सम्माकम्मन्तो (५) अम्माआजीवो (६) सम्मावायामो (७) सम्मासति (८) सम्मासमाधि। अयं खो सा भिक्खवे! मज्झिमा पटिपदा तथागतेन अभिसम्बुद्धा, चक्खुकरणी, ञाणकरणी, उपसमाय, अभिञ्ञाय, सम्बोधाय, निब्बानाय संवत्तति।

धर्मचक्र-प्रवर्तन-सूत्र

[१] ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् वाराणसी के ऋषि-पतन मृगदाव में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को सम्बोधित किया—

दो अन्त

[२] "भिक्षुओ! इन दो अन्तों (=चरम बातों) को प्रव्रजितों को नहीं सेवन करना चाहिये—(१) जो यह हीन, ग्राम्य, पृथक् जनों के योग्य, अनार्य (—सेवित), अनर्थों से युक्त कामवासनाओं में काम-सुख लिप्त होना है, और (२) जो यह दुःखमय, अनार्य (—सेवित), अनर्थों से युक्त आत्म-पीड़न (=कायक्लेश) में लगना है। भिक्षुओ! इन दोनों अन्तों (=चरम बातों) में न जाकर तथागत ने मध्यम मार्ग को जाना है, (जो कि) आँख देने-वाला, ज्ञान करने वाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि (=परम ज्ञान) के लिये, निर्वाण के लिये है।

मध्यम मार्ग

[३] भिक्षुओ! तथागत ने कौन सा मध्यम मार्ग जाना है (जो कि) आँख देनेवाला, ज्ञान करनेवाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि के लिये, निर्वाण के लिये है? यही आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग, जैसे कि—(१) सम्यक् दृष्टि (२) सम्यक् संकल्प (३) सम्यक् वचन (४) सम्यक् कर्मान्त (५) सम्यक् आजीविका (६) सम्यक् व्यायाम (=प्रयत्न) (७) सम्यक् स्मृति (८) सम्यक् समाधि। भिक्षुओ! इस मध्यम मार्ग को तथा-गत ने जाना है (जो कि) आँख देनेवाला, ज्ञान करनेवाला, शान्ति के लिये, अभिज्ञा के लिये, सम्बोधि के लिये, निर्वाण के लिये है।

चत्तारि अरियसच्चानि

१—दुक्खं अरियसच्चं

[४] इदं खो पन भिक्खवे ! दुक्खं अरियसच्चं—जातिपि दुक्खा, जरापि दुक्खा, व्याधिपि दुक्खो, मरणम्पि दुक्खं, अप्पियेहि सम्पयोगो दुक्खो, पियेहि विप्पयोगो दुक्खो, यम्पिच्छं न लभति तम्पि दुक्खं, संखित्तेन पञ्चुपादानक्खन्धापिदुक्खा।

२—दुक्खसमुदयं अरियसच्चं

[५] इदं खो पन भिक्खवे ! दुक्खसमुदयं अरियसच्चं—यायं तण्हा पोनोभविका नन्दिरागसहगता तत्र-तत्राभिनन्दिनी, सेय्यथीदं—(१) कामतण्हा (२) भवतण्हा (३) विभवतण्हा।

३— दुक्खनिरोधं अरियसच्चं

[६] इदं खो पन भिक्खवे ! दुक्खनिरोधं अरियसच्चं—यो तस्सा येव तण्हाय असेसविराग—निरोधो, चागो, पटिनिस्सग्गो, मुत्ति, अनालयो।

* रूपं, वेदना, सञ्ञा, सङ्खरा, विञ्ञाणं—एते पञ्चुपादानक्खन्धा वुच्चन्ति।

चार-आर्य-सत्य

१—दुःख आर्य सत्य

[४] भिक्षुओ! यह दुःख आर्य-सत्य है—जन्म भी दुःख है, जरा (=बुढ़ापा) भी दुःख है, रोग भी दुःख है, मृत्यु भी दुःख है, अप्रियों से संयोग (=मिलन) दुःख है, प्रियों से वियोग दुःख है, इच्छा होने पर किसी (वस्तु) का नहीं मिलना भी दुःख है। संक्षेप में पाँच उपादान स्कन्ध* दुःख हैं।

२—दुःख-समुदय आर्य सत्य

[५] भिक्षुओ! यह दुःख-समुदय आर्य सत्य है- यह जो फिर-फिर जन्म करानेवाली, प्रीति और राग से युक्त, उत्पन्न हुए स्थानों में अभिनन्दन करानेवाली तृष्णा है, जैसे कि (१) काम-तृष्णा (२) भव-तृष्णा (=जन्म-सम्बन्धी तृष्णा) (३) विभव-तृष्णा (=उच्छेद की तृष्णा)।

३—दुःख-निरोध आर्य सत्य

[६] भिक्षुओ! यह दुःख-निरोध आर्य सत्य है—जो उसी तृष्णा का सर्वथा विराग है, निरोध (=रुक जाना), त्याग, प्रतिनिस्सर्ग (=निकास), मुक्ति (=छुटकारा), लीन न होना है।

---

* रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान—ये पाँच उपादान-स्कन्ध कहे जाते हैं।

४—दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं

[७] इदं खो पन भिक्खवे ! दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं—अयमेव अरियो अट्ठङ्गिको मग्गो, सेय्यथीदं—(१) सम्मादिट्ठि (२) सम्मासङ्कप्पो (३) सम्मावाचा (४) सम्माकम्मन्तो (५) सम्माआजीवो (६) सम्मा वायामो (७) सम्मा सति (८) सम्मा समाधि ।

चतुन्नं अरियसच्चानं तिपरिवट्टञाणदस्सनं

[८] (१) 'इदं दुक्खं अरियसच्चन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि । तं खो पनिदं 'दुक्खं अरियसच्चं परिञ्ञेय्यन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि । तं खो पनिदं 'दुक्खं अरियसच्चं परिञ्ञायन्ति' मे भिक्खवे । पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि ।

[९] (२) 'इदं दुक्खसमुदयं अरियसच्चन्ति' मे भिक्खवे ! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा

४—दुःख-निरोध-गामिनी-प्रतिपदा आर्य सत्य

[७] भिक्षुओ ! यह दुःख-निरोध-गामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य है-—यही आर्य अष्टाङ्गिक मार्ग, जैसे कि (१) सम्यक् दृष्टि (२) सम्यक् संकल्प (३) सम्यक् वचन (४) सम्यक् कर्मान्त (५) सम्यक् आजीविका (६) सम्यक् व्यायाम (७) सम्यक् स्मृति (८) सम्यक् समाधि।

चार आर्य सत्यों का तेहरा ज्ञान दर्शन

[८] 'यह दुःख आर्य सत्य है'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। यह दुःख आर्य सत्य परिज्ञेय है'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले न सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख आर्य सत्य परिज्ञात है'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले न सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ।

[९] 'यह दुःख समुदय आर्य सत्य है'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। यह दुःख

उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं 'दुक्खसमुदयं अरियसच्चं पहातब्बन्ति' मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं 'दुक्खसमुदयं अरियसच्चं पहीनन्ति' मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि।

[१०] 'इदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चन्ति' मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चं 'सच्छिकातब्बन्ति' मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधं अरियसच्चं 'सच्छिकतन्ति' मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि।

[११] 'इदँ दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चन्ति'— मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं 'भावेतब्बन्ति' मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि,

समुदय-आर्य सत्य प्रहातव्य (=त्याज्य=छोड़ने योग्य) है'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख समुदय आर्य सत्य प्रहीण (=दूर) हो गया'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुआ, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ।

[१०] 'यह दुःख निरोध आर्य सत्य है'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख निरोध आर्य सत्य 'साक्षात् करना चाहिये'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख निरोध आर्य सत्य 'साक्षात् कर लिया'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ।

[११] 'यह दुःख-निरोध गामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य है'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य भावना करना चाहिये'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई। ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक

ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि। तं खो पनिदं दुक्खनिरोधगामिनी पटिपदा अरियसच्चं 'भावितन्ति' मे भिक्खवे! पुब्बे अननुस्सुतेसु धम्मेसु चक्खुं उदपादि, ञाणं उदपादि, पञ्ञा उदपादि, विज्जा उदपादि, आलोको उदपादि।

[१२] यावकीवञ्च मे भिक्खवे! इमेसु चतूसु अरियसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वादसाकारं यथाभूतं ञाणदस्सनं न सुविसुद्धं अहोसि, नेव तावाहँ भिक्खवे! सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समणब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय, अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धोति पच्चञ्ञासिं।

[१३] यतो च खो मे भिक्खवे! इमेसु चतूसु अरियसच्चेसु एवं तिपरिवट्टं द्वादसाकारं यथाभूतं ञाणदस्सनं सुविसुद्धं अहोसि, अथाहँ भिक्खवे! सदेवके लोके समारके सब्रह्मके सस्समण-ब्राह्मणिया पजाय सदेवमनुस्साय अनुत्तरं सम्मासम्बोधिं अभिसम्बुद्धोति पच्चञ्ञासिं। ञाणञ्च पन मे दस्सनं उदपादि, अकुप्पा मे चेतोविमुत्ति, अयमन्तिमा जाति, नत्थिदानि पुनब्भवो' ति।"

[१४] इदमवोच भगवा अत्तमना पञ्चवग्गिया भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुन्ति।

धम्मानुभावो

[१५] इमस्मिञ्च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने आयस्मतो

उत्पन्न हुआ। 'यह दुःख निरोध-गामिनी प्रतिपदा आर्य सत्य भावना कर लिया गया'—भिक्षुओ ! यह मुझे पहले नहीं सुने गये धर्मों में आँख उत्पन्न हुई, ज्ञान उत्पन्न हुआ, प्रज्ञा उत्पन्न हुई, विद्या उत्पन्न हुई, आलोक उत्पन्न हुआ।

[१२] भिक्षुओ ! जब तक कि इन चार आर्य सत्यों का ऐसे तेहरा बारह प्रकार का यथार्थ विशुद्ध ज्ञान-दर्शन नहीं हुआ, तब तक मैंने भिक्षुओ ! यह दावा नहीं किया कि—'देवों-सहित, मार-सहित, ब्रह्मा-सहित सभी लोक में, देव-मनुष्य-सहित, श्रमण-ब्राह्मण-सहित सभी प्रजा (=प्राणी) में, सर्वोत्तम सम्यक् सम्बोधि (=परम-ज्ञान) को मैंने जान लिया।'

[१३] भिक्षुओ ! जब इन चार आर्य सत्यों का ऐसे तेहरा बारह प्रकार का यथार्थ विशुद्ध ज्ञान-दर्शन हुआ, तब मैंने भिक्षुओ ! यह दावा किया कि 'देवों-सहित, मार-सहित, ब्रह्मा-सहित, सभी लोक में, देव-मनुष्य-सहित, श्रमण-ब्राह्मण-सहित सभी प्रजा (=प्राणी) में सर्वोत्तम सम्यक् सम्बोधि (=परमज्ञान) को मैंने जान लिया। मुझे ज्ञान-दर्शन उत्पन्न हो गया, मेरी चेतोविमुक्ति (=चित्त का मुक्त होना) अचल है, यह अन्तिम जन्म है, फिर अब जन्म लेना नहीं है।"

[१४] भगवान् ने यह कहा। सन्तुष्ट हो पञ्चवर्गीय भिक्षुओं ने भगवान् के कथन का अभिनन्दन किया।

धर्म का आनुभाव

[१५] इस व्याख्यान (=व्याकरण) के कहे जाने पर आयुष्मान्

कोण्डञ्ञस्स विरजं वीतमलं धम्मचक्खुं उदपादि—'यं किञ्चिसमुदयधम्मं सब्बन्तं निरोध धम्मन्ति'।

[१६] पवत्तिते पन भगवता धम्मचक्के भुम्मा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[१७] भुम्मानं देवानं सद्दं सुत्वा चातुम्महाराजिका देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[१८] चातुम्महाराजिकानं देवानं सुद्दं सुत्वा तावतिंसा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[१९] तावतिंसानं देवानं सद्दं सुत्वा यामा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितँ, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

कौण्डिन्य को, "जो कुछ उत्पन्न होने वाला है, वह सब नाशमान् है" यह परिशुद्ध, विमल धर्म-चक्षु उत्पन्न हुआ।

[१६] भगवान् के धर्म-चक्र को प्रवर्तित करने (=चलाने) पर भूमि पर रहने वाले देवताओं ने शब्द किया—"भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[१७] भूमि पर रहने वाले देवताओं के शब्द को सुनकर चातुर्महाराजिक देवताओं ने शब्द किया—"भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा, या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[१८] चातुर्महाराजिक देवताओं के शब्द को सुनकर त्रायस्त्रिंश देवताओं ने शब्द किया—"भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।

[१९] त्रायस्त्रिंश देवताओं के शब्द को सुनकर यामा देवताओं ने शब्द किया—"भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में-श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२०] यामानं देवानं सद्दं सुत्वा तुस्सिता देवा सद्दमनुस्सावेसुं— "एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२१] तुस्सितानं देवानं सद्दं सुत्वा निम्मानरति देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२२] निम्मानरतीनं देवानं सद्दं सुत्वा परनिम्मितवसवत्ती देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२३] परनिम्मितवसवत्तीनं देवानं सद्दं सुत्वा ब्रह्मपारिसज्जा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२४] ब्रह्मपारिसज्जानं देवानं सद्दं सुत्वा ब्रह्मपुरोहिता देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये

[२०] यामा देवताओं के शब्द को सुनकर तुषित देवताओं ने शब्द किया—"भगवान् ने यह वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२१] तुषित देवताओं के शब्द को सुनकर निर्माणरति देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२२] निर्माणरति देवताओं के शब्द को सुनकर परनिर्मित-वशवर्ती देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२३] परनिर्मितवशवर्ती देवताओं के शब्द को सुनकर ब्रह्म-पारिषद देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२४] ब्रह्मपारिषद् देवताओं के शब्द को सुनकर ब्रह्मपुरोहित देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन

अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२५] ब्रह्मपुरोहितानं देवानं सद्दं सुत्वा महाब्रह्मा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतँ भगवता वाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरँ धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२६] महाब्रह्मानं देवानं सद्दं सुत्वा परित्ताभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता वाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२७] परित्ताभानं देवानं सद्दं सुत्वा अप्पमाणाभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता वाराणसियं इसिपतने मिदगाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२८] अप्पमाणाभानं देवानं सद्दं सुत्वा आभस्सरा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता वाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[२९] आभस्सरानं देवानं सद्दं सुत्वा परित्तसुभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता वाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं

मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२५] ब्रह्मपुरोहित देवताओं के शब्द को सुनकर महाब्रह्मा देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२६] महाब्रह्मा देवताओं के शब्द को सुनकर परित्ताभ देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२७] परित्ताभ देवताओं के शब्द को सुनकर अप्रमाणाभ देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२८] अप्रमाणाभ देवताओं के शब्द को सुनकर आभास्वर देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[२९] आभास्वर देवताओं के शब्द को सुनकर परित्रशुभ

धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३०] परित्तसुभानं देवानं सद्दं सुत्वा अप्पमाणासुभा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्राह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३१] अप्पमाणासुभानं देवानं सद्दं सुत्वा सुभकिण्हका देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३२] सुभकिण्हकानं देवानं सद्दं सुत्वा वेहप्फला देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३३] वेहप्फलानं देवानं सद्दं सुत्वा अविहा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जोलोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३०] परित्रशुभ देवताओं के शब्द को सुनकर अप्रमाणशुभ देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३१] अप्रमाणशुभ देवताओं के शब्द को सुनकर शुभकृत्स्न देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३२] शुभकृत्स्न देवताओं के शब्द को सुनकर वृहत्फल देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३३] वृहत्फल देवताओं के शब्द को सुनकर अविहा देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण,

[३४] अविहानं देवानं सद्दं सुत्वा आतप्पा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियँ, समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३५] आतप्पानं देवानं सद्दं सुत्वा सुदस्सा देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३६] सुदस्सानं देवानं सद्दं सुत्वा सुदस्सी देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियँ समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३७] सुदस्सीनं देवानं सद्दं सुत्वा अकनिट्ठका देवा सद्दमनुस्सावेसुं—"एतं भगवता बाराणसियं इसिपतने मिगदाये अनुत्तरं धम्मचक्कं पवत्तितं, अप्पतिवत्तियं समणेन वा ब्राह्मणेन वा देवेन वा मारेन वा ब्रह्मुना वा केनचि वा लोकस्मिन्ति।"

[३८] इतिह तेन खणेन तेन मुहुत्तेन याव ब्रह्मलोका सद्दो अब्भुग्गच्छि। अयञ्च दससहस्सी लोकधातु सङ्कम्पि, सम्पकम्पि सम्पवेधि। अप्पमाणो च उलारो ओभासो लोके पातुरहोसि, अतिक्कम्म देवानं देवानुभावन्ति।

ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३४] अविहा देवताओं के शब्द को सुनकर अतप्य देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३५] अतप्य देवताओं के शब्द को सुनकर सुदर्श देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३६] सुदर्श देवताओं के शब्द को सुनकर सुदर्शी देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देवता, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्तिसे प्रवर्तित नहीं किया जा सकता।"

[३७] सुदर्शी देवताओं के शब्द को सुनकर अकनिष्ठक देवताओं ने शब्द किया—"यह भगवान् ने वाराणसी के ऋषिपतन मृगदाव में अनुपम धर्म-चक्र को प्रवर्तित किया है, जो लोक में श्रमण, ब्राह्मण, देव, मार, ब्रह्मा या किसी भी व्यक्ति से नहीं प्रवर्तितकिया जा सकता।"

[३८] इस प्रकार उसी क्षण में, उसी मुहूर्त्त में यह शब्द ब्रह्म-लोक तक पहुँच गया और यह दस सहस्री ब्रह्माण्ड काँप उठा,

भगवतो उदानं

[३६] अथ खो भगवा उदानं उदानेसि—"अञ्ञासि वत भो कोण्डञ्ञो, अञ्ञासि वत भो कोण्डञ्ञो' ति।" इति हि' दं आयस्मतो कोण्डञ्ञस्स अञ्ञातकोण्डञ्ञो' त्वेव नामं अहोसी' ति।*

धम्मचक्कप्पवत्तनसुत्तं निट्ठितं।

---

* पञ्चवग्गिया भिक्खू नाम आयस्मा कोण्डञ्ञो, आयस्मा वप्पो, आयस्मा भद्दियो, आयस्मा महानामो, आयस्मा अस्सजी चाति।

सम्प्रकम्पित हो गया, हिल उठा। देवताओं के तेज से भी बढ़कर बहुत भारी, विशाल प्रकाश लोक में उत्पन्न हुआ।

भगवान् का उदान

[३९] तब भगवान् ने उदान कहा—"अहा! कौण्डिन्य ने जान लिया (=अज्ञात) अहा! कौण्डिन्य ने जान लिया।" इसीलिये आयुष्मान् कौण्डिन्य का 'अज्ञात कौण्डिन्य' ही नाम पड़ा*

धर्म-चक्र-प्रवर्तन सूत्र समाप्त।

---

* पञ्चवर्गीय भिक्षुओं के नाम हैं—आयुष्मान् कौण्डिन्य, आयुष्मान् वप्प, आयुष्मान् भद्दिय, आयुष्मान् महानाम और आयुष्मान् अश्वजित।

अनत्तलक्खण सुत्तं

[१] एवं मे सुतं-एकं समयं भगवा, बाराणसियं विहरति इसि-पतने मिगदाये। तत्र खो भगवा पञ्चवग्गिये भिक्खू आमन्तेसि।'

[२] रूपं भिक्खवे! अनत्ता। रूपञ्च हिदं भिक्खवे! अत्ता अभविस्स, नयिदं रूपं आबाधाय संवत्तेय्य। लब्भेथ च रूपे 'एवं मे रूपं होतु', 'एवं मे रूपं मा अहोसीति'। यस्मा च खो भिक्खवे! रूपं अनत्ता, तस्मा रूप आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति रूपे 'एवं मे रूपं होतु', 'एवँ मे रूपं मा अहोसीति'।

[३] वेदना भिक्खवे! अनत्ता। वेदना च हिदं भिक्खवे! अत्ता अभविस्स, नयिदं वेदना आबाधाय संवत्तेय्य। लब्भेथ च वेदनाय 'एवं मे वेदना होतु', 'एवँ मे वेदना मा अहोसीति'। यस्मा च खो भिक्खवे! वेदना अनत्ता, तस्मा वेदना आबाधाय संवत्तति। न च लब्भति वेदनाय 'एवं मे वेदना होतु', 'एवं मे वेदना मा अहोसीति'।

[४] सञ्ञा भिक्खवे! अनत्ता...पे...सङ्खारा भिक्खवे! अनत्ता। सङ्खारा च हिदं भिक्खवे! अत्ता अभविस्संसु, नयिमे सङ्खारा आबाधाय संवत्तेय्युं। लब्भेथ च सङ्खारेसु 'एवं मे सङ्खारा होन्तु', 'एवं मे सङ्खारा मा अहेसुन्ति'। यस्मा च खो भिक्खवे! सङ्खारा अनत्ता, तस्मा सङ्खारा आबाधाय संवत्तन्ति। न च लब्भति सङ्खारेसु 'एवं मे सङ्खारा होन्तु' 'एवं मे सङ्खारा मा अहेसुन्ति'।

अनात्म-लक्षण-सूत्र

[१] ऐसा मैंने सुना। एक समय भगवान् वाराणसी के ऋषि-पतन मृगदाय में विहार करते थे। वहाँ भगवान् ने पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को सम्बोधित किया।

[२] भिक्षुओ! रूप अनात्मा है। भिक्षुओ! यदि रूप आत्मा होता, तो यह दुःख का कारण नहीं बनता, और रूप में 'मेरा रूप ऐसा होवे, मेरा रूप ऐसा न होवे' यह पाया जाता। चूँकि भिक्षुओ! रूप अनात्मा है, इसलिए रूप दुःख का कारण होता है और रूप में 'मेरा रूप ऐसा होवे, मेरा रूप ऐसा न होवे' यह नहीं पाया जाता।

[३] भिक्षुओ! वेदना अनात्मा है। भिक्षुओ! यदि वेदना आत्मा होती, तो यह दुःख का कारण नहीं बनती और वेदना में 'मेरी वेदना ऐसी होवे, मेरी वेदना ऐसी न होवे' यह पाया जाता। चूँकि भिक्षुओ! वेदना अनात्मा है, इसलिए वेदना दुःख का कारण होती है और वेदना में 'मेरी वेदना ऐसी होवे, मेरी वेदना ऐसी न होवे' यह नहीं पाया जाता।

[४] भिक्षुओ! संज्ञा अनात्मा है...। भिक्षुओ! संस्कार अनात्मा हैं। भिक्षुओ! यदि संस्कार आत्मा होते, तो यह दुःख के कारण नहीं बनते, और संस्कारों में 'मेरे संस्कार ऐसे होवें, मेरे संस्कार ऐसे न होवें' यह पाया जाता। चूँकि भिक्षुओ! संस्कार अनात्मा हैं, इसलिए संस्कार दुःख के कारण होते हैं और संस्कारों में 'मेरे संस्कार ऐसे होवें, मेरे संस्कार ऐसे न होवें' यह नहीं पाया जाता।

[५] विञ्ञाणं भिक्खवे ! अनत्ता । विञ्ञाणञ्च हिदं भिक्खवे ! अत्ता अभविस्स, नयिदं विञ्ञाणं आबाधाय संवत्तेय्य । लब्भेथ च विञ्ञाणे 'एवं मे विञ्ञाणं होतु' 'एवं मे विञ्ञाणं मा अहोसीति' । यस्मा च खो भिक्खवे ! विञ्ञाणं अनत्ता, तस्मा विञ्ञाणं आबाधाय संवत्तति । न च लब्भति विञ्ञाणे 'एवं मे विञ्ञाणं होतु', 'एवँ मे विञ्ञाणं मा अहोसीति' ।

[६] तं किँ मञ्ञथ भिक्खवे ! रूपं निच्चं वा अनिच्चं वाति ?

अनिच्चं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं वा तं सुखं वाति ?

दुक्खं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं विपरिणामधम्मं, कल्लन्तु तं समनुपस्सितुं, एतं मम, एसोहमस्मि, एसो मे अत्ताति ?

नोहेतं भन्ते !

[७] वेदना···पे··· सञ्ञा···पे··· सङ्खारा···पे···विञ्ञाणं निच्चँ वा अनिच्चं वाति ?

अनिच्चं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं वा तं सुखं वाति ?

दुक्खं भन्ते !

यम्पनानिच्चं दुक्खं विपरिणामधम्मं; कल्लन्तु तं समनुपस्सितुं, एतं मम, एसोहमस्मि, एसो मे अत्ताति ?

नोहेतं भन्ते !

[५] भिक्षुओ ! विज्ञान अनात्मा हैं। भिक्षुओ ! यदि विज्ञान आत्मा होता, तो यह दुःख का कारण नहीं बनता, और विज्ञान में 'मेरा विज्ञान ऐसा होवे, मेरा विज्ञान ऐसा न होवे' यह पाया जाता। चूँकि भिक्षुओ ! विज्ञान अनात्मा है, इसलिये विज्ञान दुःख का कारण होता है और विज्ञान में 'मेरा विज्ञान ऐसा होवे, मेरा विज्ञान ऐसा न होवे' यह नहीं पाया जाता।

[६] तो क्या मानते हो भिक्षुओ ! रूप नित्य है या अनित्य ?

अनित्य भन्ते !

जो अनित्य है, वह दुःख है या सुख ?

दुःख भन्ते !

जो अनित्य, दुःख और विकार को प्राप्त होनेवाला है, क्या उसके लिए यह समझना उचित है—'यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा आत्मा है ?

नहीं भन्ते !

[७] वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान नित्य या अनित्य है ?

अनित्य भन्ते !

जो अनित्य है, वह दुःख है या सुख ?

दुःख भन्ते !

जो अनित्य दुःख और विकार को प्राप्त होनेवाला है, क्या उसके लिए यह समझना उचित है—'यह मेरा है, यह मैं हूँ, यह मेरा विज्ञान है ?

नहीं भन्ते !

[८] तस्मातिह भिक्खवे ! यं किञ्चि रूपं अतीतानागतपच्चुप्पन्नं अज्झत्तं वा वहिद्धा वा, ओलारिकं वा सुखुमं वा हीनं वा पणीतं वा, यं दूरे सन्तिके वा, सब्बं रूपं नेतं मम, नेसोहमस्मि, न मेसो अत्ताति—एवमेतं यथाभूतं सम्मप्पञ्ञाय दट्ठब्बं ।

[९] या काचि वेदना, या काचि सञ्ञा, ये केचि सङ्खारा यँ किञ्चि विञ्ञाणं अतीतानागत पच्चुप्पन्नं अज्झत्तँ वा बहिद्धा वा,ओलारिकं वा सुखुमं वा, हीनं वा पणीतं वा, यं दूरे सन्तिके वा, सब्बं विञ्ञाणं नेतं मम, नेसो हमस्मि, न मेसो अत्ताति—एवमेतं यथा भूतं सम्पञ्ञाय दट्ठब्बं ।

[१०] एवं पस्सं भिक्खवे ! सुतवा अरियसावको रूपस्मिम्पि निब्बिन्दति, वेदनायपि निब्बिन्दति, सञ्ञायपि निब्बिन्दति, सङ्खारेसुपि निब्बिन्दति, विञ्ञाणस्मिम्पि निब्बिन्दति, निब्बिन्दं विरज्जति, विरागा विमुच्चति, विमुत्तस्मिं विमुत्तमिति ञाणं होति । खीणा जाति, वुसितँ ब्रह्मचरियं, कतं करणीयं, नापरँ इत्थत्तायाति पजानातीति ।

[११] इदमवोच भगवा । अत्तमना पञ्चवग्गिया भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुंति ।

[१२] इमस्मिञ्च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने पञ्चवग्गियानं भिक्खूनं अनुपादाय आसवेहि चित्तानि विमुच्चिंसु ।

अनत्तलक्खणसुत्तं निट्ठितं ।

---

[८] इसलिए भिक्षुओ ! जो कुछ भी भूत, भविष्य, वर्तमान सम्बन्धी, भीतरी या बाहरी, स्थूल या सूक्ष्म, अच्छा या बुरा, दूर या निकट का रूप है, सभी रूप न मेरा है, न मैं हूँ, न वह मेरा आत्मा है—इस प्रकार ठीक तौर से समझ कर देखना चाहिए।

[९] जो कुछ वेदना, जो कुछ संज्ञा, जो कुछ संस्कार, जो कुछ विज्ञान भूत, भविष्य, वर्तमान सम्बन्धी, भीतरी या बाहरी, स्थूल या सूक्ष्म, अच्छा या बुरा, दूर या निकट का है, सभी विज्ञान न मेरा है, न मैं हूँ, न वह मेरा आत्मा है—इस प्रकार ठीक तौर से समझकर देखना चाहिए।

[१०] भिक्षुओ ! ऐसा देखने वाला विद्वान आर्यश्रावक रूप में निर्वेद करता है, वेदना, संज्ञा, संस्कार, विज्ञान में निर्वेद करता है। निर्वेद करने से विरक्त हो जाता है। विरक्त होने से विमुक्त हो जाता है। विमुक्त हो जाने पर 'विमुक्त हो गया' ऐसा ज्ञान है। और वह ऐसा जानता है—'जन्म क्षीण हो गया (=आवागमन नष्ट हो गया), ब्रह्मचर्यवास पूरा हो गया। करना था=सो कर लिया, अब यहाँ कुछ करने को शेष नहीं है।'

[११] भगवान् ने यह कहा। सन्तुष्ट हो पञ्चवर्गीय भिक्षुओं ने भगवान् के कहे का अभिनन्दन किया।

[१२] इस धर्मोपदेश के कहे जाने पर पञ्चवर्गीय भिक्षुओं का चित्त उपादान-रहित आश्रवों (=मलों) से मुक्त हो गया।

अनात्म-लक्षण-सूत्र समाप्त।

—०—

त्रिरत्न-वन्दना

१. बुद्ध-वन्दना

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स।

अर्थ—"उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है।"

इतिपिसो भगवा अरहं सम्मासम्बुद्धो विज्जाचरणसम्पन्नो सुगतो लोकविदू अनुत्तरो पुरिसदम्मसारथी सत्था देवमनुस्सानं बुद्धो भगवा'ति।

अर्थ—वह भगवान् पूर्व-बुद्धों की तरह सबके पूज्य, सम्यक् सम्बुद्ध, सभी सद्-विद्याओं एवं सदाचरणों से युक्त, सुन्दर गति प्राप्त, लोकलोकान्तर के रहस्य को जानने वाले, संसार के मनुष्यों को राग, द्वेष और मोह से छुड़ाने के लिए अनुपम सारथी के समान, देवता और मनुष्यों के उपदेशक (= शिक्षक) स्वयं बोधस्वरूप और दूसरों को बोध कराने वाले, सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्यों से युक्त और सभी क्लेशों से मुक्त हैं।

२. धर्म-वन्दना

स्वाक्खातो भगवता धम्मो सन्दिट्ठिको अकालिको एहिपस्सिको ओपनेय्यिको पच्चत्तं वेदितब्बो विञ्ञूही'ति।

अर्थ—भगवान् का धर्म सुन्दर रूप से कहा गया है, वह तत्काल फलदायक है, कालान्तर में नहीं, वह यहीं दिखाई देने वाला है,

'आओ और इसे देख लो' कहलाने योग्य है, निर्वाण तक पहुँचाने वाला और विद्वान् पुरुषों के स्वयं जानने योग्य है।

३. संघ-वन्दना

सुपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, उजुपटिपन्नो भगवतो सावक-संघो, ञायपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, सामीचिपटिपन्नो भगवतो सावकसंघो, यदिदं चत्तारि पुरिसयुगानि अट्ठपुरिसपुग्गला—एस भगवतो सावकसंघो, आहुनेय्यो, पाहुनेय्यो, दक्खिनेय्यो, अञ्जलि-करणीयो, अनुत्तरं पुञ्ञक्खेत्तं लोकस्सा'ति।

अर्थ—भगवान् का श्रावक-संघ सुमार्ग पर चल रहा है, भगवान् का श्रावक-संघ सीधे मार्ग पर चल रहा है, भगवान् का श्रावक-संघ न्यामार्ग पर चल रहा है, भगवान् का श्रावक-संघ उचित मार्ग पर चल रहा है, जो कि यह चार युगल[1] और आठ पुरुष = पुद्गल हैं[2]—यही भगवान् का श्रावक-संघ है, वह आह्वान करने के योग्य है, पाहुन बनाने के योग्य है, दान देने के योग्य है, हाथ जोड़ने के योग्य है और लोक के लिए सर्वोत्तम पुण्य-क्षेत्र है।

---

१. भगवान् बुद्ध का श्रावक-संघ चार युग्मों (=जोड़ों) में विभक्त है—(१) स्रोतापत्ति मार्ग और स्रोतापत्ति फल को प्राप्त, (२) सकृदा-गामी मार्ग और सकृदागामी फल को प्राप्त, (३) अनागामी मार्ग और अनागामी फल को प्राप्त, (४) अर्हत् मार्ग और अर्हत् फल को प्राप्त।

२. भगवान् बुद्ध के श्रावक-संघ के आठ पुरुष ये हैं—(१) स्रोता-पत्ति-मार्ग-प्राप्त, (२) स्रोतापत्ति-फल-प्राप्त, (३) सकृदागामी-मार्ग प्राप्त, (४) सकृदागामी-फल-प्राप्त, (५) अनागामी-मार्ग-प्राप्त, (६) अनागामी-फल-प्राप्त, (७) अर्हत्-मार्ग-प्राप्त, (८) अर्हत्-फल-प्राप्त।

पञ्चशील

१. नमस्कार

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स ।

अर्थ—उन भगवान् अर्हत् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है ।

२. त्रिशरण

बुद्धं सरणं गच्छामि ।

धम्मं सरणं गच्छामि ।

संघं सरणं गच्छामि ।

अर्थ—

मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ ।

मैं धर्म की शरण जाता हूँ ।

मैं संघ की शरण जाता हूँ ।

दुतियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि ।

दुतियम्पि, धम्मं सरणं गच्छामि ।

दुतियम्पि, संघं सरणं गच्छामि ।

अर्थ—

दूसरी बार भी, मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ ।

दूसरी बार भी, मैं धर्म की शरण जाता हूँ ।

दूसरी बार भी, मैं संघ की शरण जाता हूँ ।

ततियम्पि, बुद्धं सरणं गच्छामि ।
ततियम्पि, धम्मँ सरणँ गच्छामि ।
ततियम्पि, संघं सरणँ गच्छामि ।

अर्थ—

तीसरी वार भी, मैं बुद्ध की शरण जाता हूँ ।
तीसरी वार भी, मैं धर्म की शरण जाता हूँ ।
तीसरी वार भी, मैं संघ की शरण जाता हूँ ।

३. पंचशील

१. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
२. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
३. कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
४. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।
५. सुरा-मेरय-मज्ज-पमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि ।

अर्थ—

१. मैं प्राणि-हिंसा के विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
२. मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
३. मैं व्यभिचार से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
४. मैं झूठ बोलने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।
५. मैं सुरा (=पक्की शराब), मेरय (=कच्ची शराब), मद्य और नशीली चीजों के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ ।

४. अष्टशील

१. पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
२. अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
३. अब्रह्मचरिया वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
४. मुसावादा वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
५. सुरामेरयमज्ज-पमादट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
६. विकाल-भोजना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
७. नच्च-गीत-वादित-विसूक-दस्सन-माला-गंध-विलेपन-धारण-मण्डन-विभूसनट्ठाना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।
८. उच्चासयन-महासयना वेरमणी सिक्खापदं समादियामि।

अर्थ—

१. मैं प्राणि-हिंसा से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
२. मैं चोरी से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
३. मैं अब्रह्मचर्य से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
४. मैं झूठ बोलने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
५. मैं सुरा, मेरय, मद्य और नशीली चीजों के सेवन से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।
६. मैं विकाल-भोजन[१] से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

---

१. दिन में १२ बजे से लेकर दूसरे दिन अरुणोदय के पूर्व (५ बजे प्रातः) तक के समय को विकाल माना जाता है। उपोशथ-व्रतधारी गृहस्थ को विकाल में भोजन नहीं करना चाहिए।

७. मैं नाच, गाना, बाजा और मेले-तमाशे को देखने तथा माला और सुगन्धि लेपनादि को धारण करने एवं शरीर शृङ्गार के लिए किसी प्रकार के आभूषण की वस्तुओं को धारण करने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

८. मैं बहुत ऊँची और महार्घ शय्या पर सोने से विरत रहने की शिक्षा ग्रहण करता हूँ।

भारतीय बौद्धसंघ

उद्देश्य एवं कार्य

१—निर्धन, असहाय तथा अनाथों की सहायता करना।

२—बौद्धों के विहारों, स्तूपों, धर्मशालाओं और मन्दिरों का निर्माण, संरक्षण तथा मरम्मत करना।

३—पालि तथा संस्कृत बौद्ध ग्रन्थों को प्रकाशित करना और उनके अनुवाद अन्य भाषाओं में प्रस्तुत करना।

४—सार्वजनिक उपयोग के लिये संघ की ओर से अस्पताल, स्कूल और पुस्तकालयों को खोलना।

५—बौद्ध-अध्ययन का प्रबन्ध करना।

६—पालि तथा हिन्दी शिक्षा के प्रचार में प्रोत्साहन देना और उद्देश्य की पूर्ति के लिये समाचार-पत्र, पत्रिका तथा विवरण-पत्र प्रकाशित करना।

७—बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ विभिन्न देशों में धर्मदूतों को भेजना।

संघ के उक्त उद्देश्य एवं कार्यों के सम्पादन के लिये धन की आवश्यकता है उदार दाताओं से इस पुण्यकार्य में सहयोग प्रदान करने की प्रार्थना है कृपया अपनी सहायता इस पते पर भेजें—

मंत्री, भारतीय बौद्धसंघ, सी २१/१ सी मलदहिया, वाराणसी।